यह वर दे गरुड़ अपने स्थान पर गया; और संख चूड़ भी अपने धाम को. और जीमूतबाहन भी वहां से चला, कि राह में उसका सुसरा और सास और स्त्री मिली. फिर उन समेत अपने बाप पास आया. जब यह अहवाल सुना तो उसके चचा और चचेरे भाई बल्कि सारे कुटुंब के लोग मिलने को आये, और पांवों पड़ इन्हें ले जा राज पर बिठाया.

इतनी कथा कह बैताल ने पूछा ऐ राजा! इन में से सत किसका अधिक ऊआ? राजा बीर बिक्रमाजीत बोला संखचूड़ का. बैताल ने कहा किस तरह. राजा ने कहा गया ऊआ संखचूड़ फिर जीव देने को आया और गरुड़ के खाने से इसे बचाया. बैताल बोला कि जिसने पराये लिये अपनी जान दी, उसका सत क्यों न अधिक ऊआ. राजा ने कहा जीमूतबाहन जात का खत्री है. उसे जी देने का अभ्यास हो रहा है. इससे उसे जान देनी कुछ कठिन न मअलूम दी. यह सुन बैताल फिर उसी पेड़ में जा लटका. और राजा वहां जा उसे बांध कांधे पर रख ले चला.

सोलहवीं कहानी.

बैताल बोला ऐ राजा बीर बिक्रमाजीत! चंद्रशेखर नाम एक नगर है. कि वहां का रहनेवाला रतनदत्त(१)

(१) रत्नदत्त.

सेठ था. उस के एक बेटी थी. उसका नाम उन्मादिनी था. जब वह जोबनवती ऊई तब उसके बाप ने वहां के राजा से जाकर कहा महाराज! मेरे घर में एक कन्या है. जो आप को उसकी चाह हो, तो लीजिये; नहीं मैं और किसी को दूं.

यह सुन राजा ने दो तीन प्राचीन दासों को बुलाकर कहा इस सेठ की पुत्रीके लच्छण जाके देख आओ. वे राजा की आज्ञा से सेठ के घर आये; और उस लड़की का रूप देख सभी मोहित ऊए. ऊख ऐसा गोया अंधेरे घर का उजाला, आंखें मृग की सी, चोटी नागिन सी, भवें कमान सी, नाक कीरकी सी, बत्तीसी मोती की सी लड़ी, होंठ कंदूरी की मानंद, गला कपोतका सा, कमर चीते की सी, हाथ पांव कोमल कमल से; चंद्रमुखी, चंपाबरनी, हंसगवनी, कोकिल बैनी; जिसके रूप को देख इंद्र की अप्सरा भी लजाय.

इस प्रकार की सुन्दरी सब सुलच्छणभरी देख, उन्हों ने आपस में बिचार किया, ऐसी जो नारी राजा के घर में जायगी, तो राजा इसके अधीन होयगा, और राजकाज की चिन्ता कुछ न करेगा. इससे बिहतर यह है, कि राजा से कहिये वह कुलच्छणी है, आप के योग नहीं. यह बिचार कर, वहां से राजा के पास आकर, उन्हों ने यह निवेदन किया महाराज! उस कन्या को हमने देखा; वह आप के लायक़ नहीं. यह सुनके राजा ने सेठ से कहा मैं ब्याह न करूंगा. फिर सेठ ने अपने घर आ, क्या काम

किया कि बलभद्र जो राजा का सेनापती था, उसके साथ अपनी पुची का बिवाह कर दिया. वह उसके घर में रहने लगी.

एक दिन का जिक्र है, कि राजा की सवारी उस राह से निकली. और वह भी उस समैं सिंगार किये अपने कोठे पर खड़ी थी. इत्तिफ़ाक़न, राजा की और उसकी चार नज़रें ऊईं. राजा अपने मन में कहने लगा यह देवकन्या है, या अपछरा है, या नरकन्या है. ग़रज़, उसका रूप देख मोहित हो गया; और वहां से निपट बेक़रार हो, अपने मन्दिर को आया. उसका मुंह देख द्वारपाल बोला महाराज! आप के शरीर में क्या बिथा है? राजा ने कहा आज मैं ने आते ऊए बाट में एक कोठे पर सुन्दर स्त्री देखी है. मैं नहीं जानता हूं, कि वह हूर, या परी, या इनसान है; कि उसके रूप ने एक बारगी मेरा मन मोह लिया. इससे बेकल हूं.

यह सुनके, दरबान ने अर्ज़ की महाराज! उसी सेठ की लड़की है. जो आप का सेनापती बलभद्र है, वह उसे ब्याह लाया है. राजा ने कहा मैं ने जिन लोगों को लच्छण देखने भेजा था, उन्हों ने हम से छल किया. यह कह राजा ने चोबदार को फ़रमाया, उन्हें जल्दी ले आवो. राजा की यह आज्ञा पा, चोबदार उन्हें बुला लाया. ग़रज़, जब वे राजा के सनमुख आये तो राजा ने कहा मैं ने जिस लिये तुम्हें भेजा था, और जो मेरी इच्छा थी, सो तुम ने न की. बल्कि अपने जी से एक

बात झूठी बनाकर मुझे उत्तर दिया. और आज मैं ने अपनी आंखों से उसे देखा. वह ऐसी सुन्दर नारी सब गुन पूरी है, कि इस समैं उस सी मिलनी कठिन है.

यह सुनके उन्हों ने कहा महाराज! जो आप फ़रमाते हैं सो सच है. पर हम ने उसे कुलच्छणी जिस वास्ते ज़ज़ूर में अर्ज़ किया था सो वह मुद्आ सुनिये. आपस में हम ने यह बिचारा, ऐसी सुन्दर नारी जो महाराज के घर में जायगी तो महाराज देखतेही उसके बस होंगे, और राजकाज सब छोड देंगे तो राज भंग होगा. इस भय से हम ने ऐसा बनाकर कहा था.

यह सुनके राजा ने उन से तो कहा कि तुम सच कहते हो. पर उसकी याद में राजा को निपट बेचैनी थी. और सब लोगों पर राजा की बेक़रारी ज़ाहिर थी; कि इतने में बलभद्र भी आ पहुंचा. और उन्ने हाथ जोड राजा के सामने खडे हो कर अर्ज़ की हे पृथवीनाथ! मैं आप का दास, वह आप की दासी; और उसके हेत आप इतना कष्ट पावैं. इस से महाराज आज्ञा दीजिये कि वह हाज़िर हो. यह बात सुन राजा निहायत क्रोध करके बोला बिरानी स्त्री के पास जाना बड़ा अधर्म है. यह बात क्या तू ने मुझ से कही? क्या मैं अधर्मी हूं जो अधर्म करूं? बिरानी स्त्री माता की समान है. और बिराना धन माटी बराबर. सुनो भाई! जैसा अपना जी आदमी समझे; वैसा ही सब का जी समझे. फिर बलभद्र बोला वह मेरी दासी है. जब मैं ने आप को दी, फिर बिगानी

स्त्री क्योंकर ऊई. राजा ने कहा जिस काम के करने से संसार में कलंक लगे, सो काम मैं न करूंगा. फिर सेनापती ने अर्ज़ की महाराज! उसे मैं घर से निकाल, और जगह रख, बेसवा कर आप के पास लाऊंगा. तब राजा ने कहा जो तू सती नारी को बेस्वा करेगा तो मैं तुझे बड़ा दंड दूंगा.

यह कह राजा उसकी याद में चिन्ता करके दस दिन में मर गया. फिर बलभद्र सेनापती ने अपने गुरू से जाकर पूछा मेरा स्वामी उन्मादिनी के कारन मुआ. अब मुझे क्या करना उचित है, सो आज्ञा कीजिये. उसने कहा सेवक का धर्म यह है, स्वामी के पीछे अपना भी जी दे. यह सुनके बख़्शी वहां गया, जहां राजा के तईं जलाने को ले गये थे. जितनी देर में राजा की चिता तैयार ऊई, उसने भी स्नान पूजा से फ़राग़त की. और जब चिता में आग दी, तब यह भी चिता के पास गया; और सूरज के साम्हने हाथ जोड़ कर कहने लगा ऐ सूरज(१) देवता! मैं मन, बच, कर्म करके यही कामना मांगता हूं कि जन्म जन्म इसी स्वामी को पाऊं और तेरा गुन गाऊं. इतना कह, दंडवत कर, आग में कूद पड़ा.

यह ख़बर सुन उन्मादिनी अपने गुरू के पास गई; और उससे सब कह के पूछा महाराज! स्त्री का धर्म क्या है? उस ने कहा माता पिता ने जिस के तईं अपनी कन्या दी उसी की सेवा करने से वह कुलवन्ती कहलाती है.

(१) सूर्य्य.

और धर्मशास्त्र में ऐसा लिखता है कि जो नारी अपने स्वामी के जीते तप बरत करती है, वह अपने स्वामी की उमर कम करती है, और अंतकाल को नकर में पड़ती है. पर उत्तम यह है, कैसा ही स्वामी हीन हो, उसी की सेवा करने से इस की मुक्ति होती है. और जो नारी श्मशान में सती होने की कामना कर जितने पांव ज़मीन पर रखती है, उतने अश्वमेध यज्ञ करने का फल होता है; इस में कुछ संदेह नहीं. और सती होने के समान नारी का कोई धर्म नहीं. यह सुन, दंडवत कर, अपने घर को आई; और स्नान ध्यान कर, बहुत सा दान ब्राह्मणों को दे, चिता पास जा, एक परिक्रमा कर बोली कि ऐ नाथ! मैं तेरी दासी जन्म जन्म हूं. इतना कह, यह भी आग में जा बैठी और जल गई.

इतनी कथा कह बैताल बोला ऐ राजा! इन तीनों में किस का सत अधिक ऊआ? राजा बीर बिक्रमाजीत ने कहा उस राजा का. बैताल ने कहा किस तरह. राजा बोला सेनापती को दी ऊई स्त्री को छोड़ा, और उसी के वास्ते जान दी; पर धर्म रक्खा. स्वामी के लिये सेवक को जी देना उचित है. और पतिके लिये स्त्री को सती होना लाज़िम है. इस कारण राजा का सत अधिक ऊआ. बैताल इतना सुन उसी तरवर में जा लटका. राजा भी, पीछे पीछे जा, फिर उसे बांध कांधे पर रख ले चला.